IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

आदिकालीन साहित्य में वर्णित तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियां

डॉ. बृजेन्द्र कुशवाहा

अतिथि विद्वान -हिंदी विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश (Abstract)

आदिकालीन हिंदी साहित्य, जो लगभग 10वीं से 14वीं शताब्दी तक फैला हुआ है, तत्कालीन राजनीतिक उथल-पुथल का जीवंत प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। इस काल में हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् देश छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हो गया, जिससे आंतरिक कलह और विदेशी आक्रमण बढ़ गए। साहित्य में मुख्य रूप से वीरगाथा काव्य के माध्यम से राजपूत शासकों की वीरता, युद्ध और राजनीतिक संघर्षों का वर्णन मिलता है, जैसे पृथ्वीराज रासो। यह शोध पत्र तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करता है, जिसमें मुस्लिम आक्रमण, राजपूतों की आपसी लड़ाइयाँ और साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाएँ शामिल हैं। शोध से पता चलता है कि साहित्य न केवल इतिहास का दर्पण है बल्कि सामाजिक-धार्मिक परिवर्तनों का भी संकेतक है।

कीवर्ड्स (Keywords)

आदिकाल, हिंदी साहित्य, राजनीतिक परिस्थितियां, वीरगाथा काल, राजपूत शासक, मुस्लिम आक्रमण, पृथ्वीराज रासो, हर्षवर्धन, महमूद गजनवी, मोहम्मद गोरी, आंतरिक कलह, विदेशी आक्रमण।